

चेरी बलि बलि जाए (१०१)

गोपियों के घर मन मोहन आये ।

माखन चुराने सखा संग लाये ॥

देखी मटकी माखन की भरी है

भए प्रसन्न नन्द लाल हरी है

लगे खावन सब हर्ष बढ़ावे ॥१॥

बांट बांट सब माखन खाया

बाकी बचा सो भूमी गिराया

तोड़ फोड़ मटकी चले है पराये ॥२॥

इतने में आई घर की ग्वाली

पकड़ लिया तेंहि पिया बन माली

कहन लगी क्यों आए नन्द जाए ॥३॥

तब बोले मन मोहन कान्हा

मैं गोपी निज घर है जाना

भूल भई तुम क्यों दुख पाए ॥४॥

गोपी कहा क्यों हाथनि लगा माखन
सांचि बताओ तुम श्यामल घन
सुबल सुदामा क्यों संग सजाए ॥५॥

मोहन कहा माखन में चींटी पड़ी थी
चींटी निकालने की कोशिश करी थी
गवाही देने को सखा हैं बुलाए ॥६॥

सुन सुन कान्हा की बतियां भोरी
प्रेम मगनु भई गोप किशोरी
सुन्दर सलोने श्याम कण्ठ से लगाए ॥७॥

धन्य धन्य गोपी धन्य धन्य ग्वाला
जिन संग खेले मदन गोपाला
चरण कमल चेरी बलि बलि जाए ॥८॥